No. of Printed Pages : 4

MHD-21

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)

(एम. एच. डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2022

एम.एच.डी.-21 : मीरा का विशेष अध्ययन

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

***नोट : प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं ***दो*** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) अँखियाँ कृष्ण मिलन की प्यासी (टेर)

आप तो जाय द्वारका छाये, लोक करत मेरी हाँसी

आम की डार कोयलिया बोलै, बोलत सबद उदासी

मेरे तो मन (अब) ऐसी आवै, करवत लेहौं कासी

मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल की दासी

(ख) माणक मोती परत न पहरूँ, मैं तो कबकी नट गी।

गहणों म्हाने माला दोवड़ो, और चंनण की कुटकी

नित प्रत जाऊँ गुर दरसण, नाचूँ दै दै चुटकी

परमगुरु के सरणै जाऊँ, करूँ प्रणाम सिर लटकी।

जेठ बहू की काण न मानूँ, पड़ो घूँघट पर पटकी

करम लिखायो साध संगत में, हर-सागर में लटकी।

मीरा के प्रमुख गिरधरनागर, भो–सागर से छटकी

(ग) एक कुल लाजै मीरां आपणो, दूजो बंस राठोड़,

तीजा लाजैजी मीरां मेड़तो, चोथो गढ़ चित्तोड़,

भक्ति छोड़ोजी हरिनाम की

एक कुल त्याँरा राणा आपणो, दूजो बंस राठोड़,

तीजो त्यारांजी राणां मेड़तो, चोथो गढ़ चित्तौड़,

भक्ति करांजी भगवान की

यो मन लाग्यो बैराग से, रमस्याँ साधां री लार, संता री लार

भक्ति न छूटे हरिनाम की

(घ) बस्तु अमोलक ही मेरे सतगुर, किरपा कर अपनायो

जनम जनम की पूँजी पाई जग में सभी खोवायो

खरचै नहि कोई चोर न लेवे, दिन दिन बढ़त सवायो

सतकी नाम खेवटिया सतगुर, भवसागर तर आयो

मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरष हरष जस गायो

2. मीरा से संबंधित जनभ्रांतियों पर प्रकाश डालिए। 10

3. भारतीय चिंतन परम्परा में 'कृष्ण' के स्वरूप का विवेचन कीजिए। 10

4. मीरा की कविता में लोक के प्रभाव की व्याख्या कीजिए। 10

5. मीरा के काव्य से स्त्री की स्थिति को किन रूपों में जाना जा सकता है ? विचार कीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : $2\times5=10$

(क) मीरा के काव्य में अप्रस्तुत योजना

(ख) मीरा की भक्ति में वृंदावन

(ग) तलद्यद

(घ) मेड़ता में मीरा का बचपन